: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

BRAHMVARCHAS SHODH SANSTHAN
SHANTIKUNJ, HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

समयदान का सुनियोजन कैसे व कहाँ ?

गोबर भरी मसक पीठ पर लादे मनुष्य इठलाता-इतराता फिरता है। घोड़े की लीद बटोरने और उसे चमचम पन्नी से सजाने की खेल-खिलवाड़ में ही लगा रहता है। यह भूल जाता है कि भगवान ने मात्र शरीर रूपी झुनझुना ही उसे नहीं थमाया है, अशर्फियों के थैले जैसा एक दूसरा अनुदान-पुरस्कार भी दिया है, जिसका सदुपयोग बन पड़ने पर वह कुबेर जैसा सम्पन्न, गणेश जैसा बुद्धिमान और इन्द्र जैसा सामर्थ्यवान बन सकता है। यह उपहार है- लम्बी अवधि तक साथ देने वाला जीवन। जीवन अर्थात् जीवित रहने तक साथ देने वाला समय। जीवन अवधि ही वह सम्पदा है, जिसका सदुपयोग बन पड़े, तो साधारण स्तर का व्यक्ति भी देवोपम सुसम्पन्न और सुसंस्कृत बन सकता है। स्वयं यशस्वी बनने के साथ-साथ दूसरों को उबारने-बढ़ाने का श्रेय संचित कर सकता है।

दूरदर्शिता उभरे, तो एक ही लक्ष्य दीख पड़े कि समय-सम्पदा का ऐसा सदुपयोग किया जाय, जिसके आधार पर अपना, अपने साथियों का और समूचे संसार का अभिनव अभ्युदय हाथ आ सके। साथ ही उन विभूतियों का भंडार हस्तगत हो सके, जिसके लिए लोग तरसते हैं। जिनकी सूझ-बूझ से जीवन अवधि का दूरदर्शियों जैसा उपयोग बन पड़ता है, उन्हें विभूतिवान महामानव के रूप में सराहा जाता है।

यह युग संधि है। यह मानवी भविष्य का सर्वनाश अथवा अनुपम अभ्युदय में से एक हाथ लगने का परीक्षाकाल जैसा वह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

समय है, जिसमें विचारशीलों की दूरदर्शिता और प्रतिभा की परीक्षा होने जा रही है। जो कसौटी पर खोटे उतरेंगे, उन्हें नकली सिक्कों की तरह सर्वत्र तिरस्कृत एवं बहिष्कृत ही किया जा सकेगा। इसलिए सामयिक समझदारी का तकाजा एक ही है कि स्रष्टा के आह्वान का अनुशासन ठीक तरह निबाहते-पालन करते हुए उस श्रेय को उपलब्ध किया जाय, जो तपाये हुए सोने को हर कहीं मिलता रहता है। समय, श्रम और मनोयोग का समुचित प्रयोग यदि परमार्थ प्रयोजनों के लिए बन पड़े, तो समझना चाहिए कि किसी पनडुब्बे ने गहरा गोता लगाकर मणि-मुक्तकों की एक बड़ी राशि जमा कर ली।

आठ घंटा कमाने, सात घंटा सोने, पाँच घंटा अन्य सांसारिक कृत्य करते रहने से निजी जीवन यात्रा २० घंटे की अवधि में भलीप्रकार चलती रह सकती है। चार घंटे हर किसी के पास निश्चित रूप से उस प्रयोजन के लिए बच जाते हैं, जिसमें सर्वतोमुखी श्रेय-साधना करते हुए कृतकृत्य बना जा सके।

इन दिनों परमार्थ में सर्वोच्च कहा जाने वाला परमार्थ है—'जन मानस का परिष्कार'। विचार विकृति ने ही व्यक्ति और समाज को अगणित विपत्तियों से जकड़ दिया है। पतन और पराभव का यही एक कारण है। सर्वनाश की घड़ी इसी एक कारण से असंख्यों विभीषिकाओं समेत निकटतम खिंचती चली आ रही है। यदि इस एक आक्रमण-आघात से बचा जा सके, तो समझना चाहिए कि उज्ज्वल भविष्य की संभावना सुनिश्चित हो गयी, सतयुग की वापसी का उपक्रम ठीक तरह बन गया।

यह समय सोचने का नहीं, कुछ कर गुजरने का है। लोकमंगल के लिए हमारे समय का एक बड़ा अंश नित्य प्रति सुनियोजित रीति से लगते रहना ही चाहिए। इतना तो व्यस्त और अभावग्रस्त समझे जाने वाले लोग भी कर सकते हैं कि न्यूनतम दो घंटा नित्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपने संबद्ध वातावरण को परिष्कृत एवं समुन्नत बनाने के लिए संकल्पपूर्वक लगाते रहने का निश्चयपूर्वक व्रतधारण कर लिया जाय और लोकमानस को परिष्कृत करने के लिए अपने योग्य कार्य में बिना प्रमाद बरते, लगाते रहा जाय।

इस संदर्भ में स्रष्टा की भविष्य निर्धारण से संबंधित योजना शान्तिकुञ्ज के माध्यम से क्रियारत है। अपनी अलग योजना बनाने की अपेक्षा यही उचित है कि इसी में रीछ-वानरों, ग्वाल-वालों, बुद्ध के परिव्राजकों और गाँधी के सत्याग्रहियों की तरह सम्मिलित रहा जाय और जो रणनीति महान विचारक ने निर्धारित की है, उसी में सहभागी बनकर वह श्रेय उपलब्ध किया जाय, जो डेढ़ चावल की अलग खिचड़ी पकाने वालों के लिए किसी प्रकार संभव नहीं हो सकता। अकेला सिपाही किसी संग्राम को जीत नहीं पाता। विजय-श्री तो सुगठित सेना को अनुशासनबद्ध रीति-नीति अपनाने पर ही हस्तगत होती है।

अपनी मनःस्थिति एवं परिस्थिति के अनुरूप क्या काम किस प्रकार करना ठीक रहेगा, इसके लिए शान्तिकुञ्ज का एक पाँच-दिवसीय सत्र सम्पन्न कर लिया जाय, तो उपयुक्त योजना सहज ही बन जायेगी। यह बैटरी चार्ज करा देने जैसा प्रयोग है, जिसे समय-समय पर बार-बार कराने की आवश्यकता पड़ती है। युग संधि के इन दस वर्षों में यदि हर साल एक सत्र सम्पन्न करते रहा जाय, तो बदलती परिस्थितियों के अनुरूप परिवर्तित-परिवर्धित स्तर का कार्य-क्रम बनाने की सुविधा हो सकती है।

साधारणतः एक काम तो हर किसी के लिए करने योग्य है, वह है— झोला पुस्तकालय का संचालन। शान्तिकुञ्ज से अद्भुत युग साहित्य की अत्यन्त सस्ती और युग चेतना से सराबोर पुस्तकों क, पत्रिकाओं को अपने पास झोले में रखा जाय और उन्हें सम्पर्क क्षेत्र के हर शिक्षित को पढ़ने देने के लिए स्वयं फेरी लगायी जाय।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पढ़ लेने पर उन्हें वापस लेने भी स्वयं ही जाया जाय। बिना किसी पारिश्रमिक-फीस के यह कार्य करते रहना उन लोगों को नव चेतना से लाभान्वित करने का परमार्थ है, जो इस साहित्य को घर बैठे पढ़ते रहने का लाभ उठाते हैं। उन्हें इतना कार्य और करते रहने के लिए सहमत करना चाहिए कि अपने सम्पर्क के, बिना पढ़ों को उसे सुनाते रहने की सेवा-साधना स्वयं करते रहें। नया साहित्य निरन्तर मँगाते रहने के लिए बीस पैसा नित्य अंशदान से काम चल जाता है और वह मँगाया हुआ साहित्य अपने ही परिकर की सम्पदा बनकर सुरक्षित रहता है और पीढ़ियों तक प्रेरणास्रोत बना रहता है।

इसके बाद का दूसरा चरण है- युग चेतना का आलोक वितरित करने, घर-घर अलख जगाने निकल पड़ना तथा ज्ञानरथ को अपने क्षेत्र में घुमाते रहना। यह प्रज्ञावाहन अपनी समूची साज-सज्जा के साथ प्रायः तीन हजार से कम में ही बन जाता है। इसमें रबड़ के ठोस पहियों वाला सुसज्जित प्रचाररथ बन जाता है। उसी में टेपरिकार्डर, लाउडस्पीकर, बैटरी एवं साहित्य सुसज्जित रूप से फिट किया होता है। इस ज्ञान-वाहन को जिस हाट-बाजार, गली-मुहल्ले घुमाने ले जाया जाय, वहीं एक कुशल वक्ता, भावभरा गायक साथ चलता है और अपनी प्रेरणाओं से राह चलतों तक में प्राण-संवेदना उभारता चलता है। पुस्तकें भी साथ रहने से झोला पुस्तकालय का प्रयोजन भी सधता है और जो खरीदना चाहे, उन्हें भी निराश नहीं होना पड़ता। अवकाश के समय दो से लेकर चार घण्टे तक इस ज्ञान रथ को जन-जागरण के लिए घुमाते रहने का सत्परिणाम कुछ ही दिनों में आँखों के सामने आ खड़ा होता है और बताता है कि लोकमानस ने किस प्रकार प्रगतिशीलता अपना ।यी

तीसरा कार्य है- साप्ताहिक सत्संगों का प्रचार आन्दोलन-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सद्ज्ञान समारोह। इसमें सम्मिलित करने के लिए लोगों को समेटना-बटोरना तो पड़ता है, पर साथ ही यह भी निश्चित है कि जो इसमें भाग लेते हैं, वे अनुभव करते हैं कि उन्हें किसी अविज्ञात शक्ति द्वारा उठाया और प्रगति-पथ पर धकेला जा रहा है। मित्र-मण्डली में से किन्हीं का जब जन्मदिन हो, तो एक हर्षोत्सव मनाने के रूप में भी सत्संग नियोजित किया जा सकता है।

इन आयोजनों के चार कार्यक्रम हैं, जो प्रायः दो घंटे की अवधि में पूरे हो जाते हैं। १- अगरबत्ती और दीपक वाला अत्यन्त सरल दीप यज्ञ २- गायत्री मंत्र का समवेत स्वरों में गायन ३- सहगान कीर्तन ४- मिशन के प्रतिपादनों में से जो प्रेरणाप्रद प्रासंगिक हो, उन्हें उपस्थित जनों को पढ़कर सुनाना ५- झोला पुस्तकालय के अनुरूप साहित्य, पढ़ने-सुनाने के लिए सम्मिलित होने वाले आगन्तुकों को सौंपना।

इस संदर्भ में और भी कुछ मिलते-जुलते काम हैं। स्लाइड प्रोजेक्टर के माध्यम से प्रकाशचित्र दिखाने, उनकी व्याख्या करने घर-घर मुहल्ले-मुहल्ले पहुँचने का प्रयोग। दूसरा ऐसा ही एक उपकरण है, जिसमें टेपरिकार्डर, एम्प्लीफायर और लाउडस्पीकर फिट है। उन्हें जिस घर में भी ले जाया जाय, वहाँ मशीनें ही एक प्रबुद्ध व्यक्ति की- लोकगायक की तरह अपना काम करना शुरू कर देती हैं। इन दोनों की संयुक्त कीमत प्रायः डेढ़ हजार के लगभग बैठती है।

इसी बात को यों भी कह सकते हैं कि ज्ञानरथ स्लाइड-प्रोजेक्टर, ज्ञानपेटी समेत सारे उपकरण पाँच हजार के लगभग में बन जाते हैं। यह ऐसे साधन हैं, जिनके सहारे कोई भी समयदानी युगचेतना के विस्तार की महती भूमिका निभा सकता है। इन सबका मूल्य प्रायः एक-सवा तोले सोने के बराबर है, जिसे उसके द्वारा बन पड़ने वाली सेवा-साधना का महत्व समझने वाला अपने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

से अथवा मित्रों की सहायता से किसी न किसी प्रकार जुटा ही सकता है ।

विचारक्रान्ति के लिए दीवारों पर आदर्श वाक्य लिखने का अभ्यास किया जा सकता है और दरवाजों-फर्नीचरों पर स्टीकरों को चिपकाने का आन्दोलन सरलतापूर्वक आगे चलाया जा सकता है ।

यदि अपने जैसे चार साथी और जुटा लिए जायें और उनमें समयदान तथा अंशदान के रूप में कुछ पैसे नित्य निकालते रहने बात विनिर्मित की जा सके, तो समझना चाहिए इस छोटी मण्डली के प्रभाव-योगदान से ही इतना कुछ बन पड़ सकता है, कि उपरोक्त सभी काम बड़ी सफलता से- नियमित दान से-चल सकें और एक क्षेत्र की जन-जागृति में असाधारण सफलता हस्तगत हो सके । एक प्रतिभाशाली अग्रदूत यदि अपने जैसे चार और उत्साही जुटाकर पाँच की मंडली गठित कर ले, तो समझना चाहिए कि वहाँ एक शक्ति केन्द्र विनिर्मित हो गया, जो अपने क्षेत्र में प्रकाश फैलाने वाले जेनरेटर और हरियाली उगाने वाले ट्यूबवेल जैसा क्रिया-कलाप निश्चित रूप से सम्पन्न कर लेगा ।

इन दस वर्षों में हर जगह सहस्रवेदी दीपयज्ञों की परम्परा चलायी जा रही है । इसका क्रिया-कलाप इतना सरल है कि उसे कहीं भी बड़ा सुगमपूर्वक नियोजित किया और सफल बनाया जा सकता है । इसमें उपस्थितजनों को जो प्रेरणाएँ उपलब्ध करायी जाती हैं और जो गतिविधियाँ अपनाने के लिए उन्हें प्रोत्साहित किया जाता है, उसे देखते हुए यही कहा जा सकता है कि पाँच से पच्चीस, पच्चीस से एक सौ पच्चीस, एक सौ पच्चीस से आगे बढ़ने की पुण्य-प्रक्रिया चल पड़े, तो यह क्रम समूचे संसार को नवचेतना से अनुप्राणित करने में सफल होगा ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दीपयज्ञ की प्रक्रिया को ध्यान में रखकर ही यह विश्वास किया गया है कि शान्तिकुञ्ज ने जो एक लाख देव संगठन खड़े करने और एक करोड़ व्यक्तियों को उनका सहभागी बनाने का निश्चय किया है, वह पूरा होकर ही रहेगा। इतने बड़े समुदाय द्वारा जब अगले कदम उठेंगे, तो संसार भर के ६०० करोड़ मनुष्यों को अभिनव परिवर्तन के किए सहमत किया जा सकेगा। नया-इंसान बनाने, नया संसार बनाने का दैवी संकल्प इस नवगठित युगशिल्पी समुदाय के माध्यम से पूरा होकर रहेगा।

जहाँ मिशन का नवजागरण आन्दोलन किसी भी रूप में प्रवेश पा चुका है, वहाँ उस क्षेत्र को एक मण्डल की तरह गठित किया जा रहा है और आशा की जा रही है कि सरकारी जिलों, तहसीलों, मण्डलों की तरह धर्म-तंत्र को यह मण्डल भी अपने-अपने क्षेत्र का दायित्व संभालेंगे और वहाँ फैली हुई दुष्प्रवृत्तियों में से अनेकों का उन्मूलन करने में सफल होंगे; साथ ही सत्प्रवृत्तियों का ऐसा संवर्धन करेंगे, जिसे युग धर्म का निर्वाह कहा जा सके; जिसके प्रोत्साहन पर जन-जन द्वारा धर्म-धारणा और सेवा-साधना का निर्वाह बन पड़ने का अच्छा वातावरण विनिर्मित हो सके।

समीपवर्ती क्षेत्र में जन जागरण के कार्यक्रम लेकर निकलने वाली साइकिल-टोलियों का एक ऐसा उपक्रम बनाया गया है, जिससे प्राचीन काल की तीर्थ-यात्रा परम्परा का प्राण, धर्म प्रचार की पदयात्रा का नये सिरे से, नया पुनर्जीवन बन पड़े और भारत माता के हर कोने में युग चेतना का उत्साहवर्धक बिगुल बज सके।

अखण्ड ज्योति पत्रिका के नये पंजीकृत पाठक इन दिनों प्रायः पाँच लाख बन चुके हैं। पाँच लाख ने अपना प्रभाव क्षेत्र पच्चीस लाख पहुँचा दिया है। अब तक की सफलताओं और भावी सम्भावनाओं की सफलताओं का विश्वास इसी आधार पर परिपक्व हुआ है कि जहाँ अखण्ड-ज्योति पहुँचती है, समझना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

चाहिए कि शांतिकुञ्ज की प्राण-चेतना वहाँ हर दिन पहुँचती है, एक प्रवचन-उद्बोधन का, प्रेरणा संचार का क्रम जारी रखती है। यह बीज पककर, अंकुरित-पल्लवित न हों, ऐसा हो ही नहीं सकता। अखण्डज्योति का विस्तार अर्थात् जन जीवन का योजना-बद्ध संचार। इस लाभ को प्राप्त करने के लिए मात्र दस पैसे नित्य के समान आतिथ्य-व्यवस्था करनी पड़ती है, बदले में प्राणवान साहित्य की सम्पदा निरन्तर घर में संचित होती जाती है। इससे परिजन और पड़ौसी असाधारण लाभ उठाते और युग सृजन अभियान में सहकार प्रस्तुत करते रहते हैं। यही कारण है कि अखण्डज्योति पाठकों में, सृजन-शिल्पियों में यह होड़ लगी रहती है कि कौन अपनी पत्रिका के कितने नये सदस्य बढ़ाये और अपनी बिरादरी को कितना विस्तृत एवं कितना समर्थ बनाये।

शान्ति-कुञ्ज एक शक्ति केन्द्र के रूप में उभरा है। यह किसी व्यक्ति विशेष की योजना, क्षमता एवं प्रयत्नशीलता भर की प्रति-क्रिया नहीं है। इसका सूत्र-संचालन वह दैवी सत्ता कर रही है, जिसने असंतुलन को संतुलन में बदलने के लिए प्रतिज्ञा की थी और अब तक वह आश्वासन ठीक प्रकार निभता चला आया है। शान्ति-कुञ्ज-उद्भव में उसी का भावना एवं संरचना उभरती हुई देखी जा सकती है और दृष्टिवानों को आश्वासन दिलाती है कि पूर्वदिशा में उदय हुआ स्वर्णिम सूर्य, संसार भर को अगले दिनों प्रकाश प्रदान करेगा। शान्तिकुञ्ज की योजनाओं को निरन्तर अग्रगामी एवं द्रुत-गामी सफलताएँ अर्जित करते देखकर भी ऐसा ही अनुमान लगाया और विश्वास किया जा सकता है। समयदान के लिए उभरता उत्साह इसका प्रत्यक्ष साक्षी है। ❀

मुद्रकः—युगान्तर चेतना प्रेस, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org